अध्याय अठारवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढाय नमः॥

"हे निर्विकार, अनाम (ब्रह्म निर्गुण तथा निराकार होता है) तथा नूतन सुखधाम, मेरे मन में आप के चरणों के प्रति प्रेम और आत्मीयता निर्माण हो। उस पार ले जाने वाले हे सिद्धपरब्रह्म, आप निर्मलता की मूर्ति हैं। आप विश्वासपात्र हैं, मैं ने आप के चरण प्राप्ति की मनोकामना की है, इसलिए आप मेरी रक्षा कीजिए।"

जिसका कोई आदि तथा अंत न हो, ऐसे आप अविनाशी होते हुए अपनी शक्ति से इस जगत को चलाते हैं। पलभर के लिए माया का खेल दिखाकर, फिर उस खेल को समाप्त करके उसे अपने आप में समा लेते हैं। आप स्वयं हर्षित होकर माया का खेल खेलते समय, सुख तथा दुखों को हमारे मत्थे मढ़ते हैं और हम अज्ञानी लोग आप को न जानकर इस संसार में केवल दुखों का सामना ही करते रहते हैं। चौरासी लक्ष योनियों में जन्म लेने के पश्चात, मनुष्य जन्म पाकर तथा ऐसे कई जन्मों में सांसारिक बंधनों में बंधे रहकर, हमने क्या प्राप्त किया, यही मेरे समझ में नहीं आ रहा है। अगर आप की कृपा का लाभ नहीं होगा तो भवभय नष्ट नहीं होगा और अन्य उपाय करने से भी वे व्यर्थ ही हो जाएंगे। हे सिद्धनाथजी, आप की कृपा से इस जगत के अनेक प्राणी पार लगे हैं, इसलिए आत्मोद्धार के लिए आप की संगति के सिवाय अन्य कोई भी उपाय नहीं है। मैं मेरा प्रारब्ध नहीं जानता, जो भी है वह आप ही का है ऐसा समझकर मैं ने मेरा बोझ (प्रारब्ध से प्राप्त दुख तथा कष्ट) सिर से उतारकर नीचे रख दिया है। इसलिए, हे सिद्धनाथजी मुझे आनंद प्रदान कीजिए। आप दयालु तथा सर्वज्ञ होने के कारण, मेरे मन में किसी प्रकार का भय नहीं है। आप मेरे मन को पूर्णतः समझते हैं इसलिए, आप जो योग्य समझते हैं, वही कीजिए। मैं जो कुछ भी करूँ, वह सब आप के लिए ही हो, ऐसा कीजिए। मेरा हित आप के चरणों में अर्पण करके अब मैं मुक्त हो गया हूँ। आप अनाथों के नाथ होकर सभी को संकटों से बचाते हैं और शरणागतों का निश्चित रूप से प्रतिपाल करते हैं। कुछ भी किए बगैर भक्तों को आप अनिवार संकटों से तारते हैं ऐसी आप की कीर्ति हमने सुनी है। श्रोतागण, अब यह सुरस कहानी सुनिए।

अगर पशु भी सतगुरुनाथजी की दया के पात्र हो सकते हैं तो मनुष्य क्यों नहीं हो सकता? पूर्वार्ध में बयान किया था की सिद्धजी प्रतिदिन रात को भीमप्पा के घर रहकर सुबह मठ लौटते थे। भीमप्पा का लेपालक सिद्धप्पा के गुरप्पा नाम का एक बेटा हुआ; महाराज उस मासूम बच्चे को गोद में बिठाकर खिलाते थे। उस बच्चे की माँ का देहांत हो जाने के कारण वह हमेशा सिद्धजी के पास रहता था और उनके शरीर पर चैन से खेलकूदता रहता था। भले कितने भी कष्ट क्यों न हो, फिर भी सिद्धनाथजी उसे अपने से अलग न करते हुए उसकी लातें बड़े प्रेम से सहते थे। एकबार कुछ भक्तगण वहाँ इकट्ठा हुए और सिद्धनाथजी से बोले, "महाराज, यह गुरप्पा आप को अति कष्ट दे रहा है, इसलिए अब इसे हमारे पास दीजिए, हम उसे महिलाओं के पास छोड़कर आयेंगे।" तब सिद्धजी ने उन्हें कहा, "यह तो इस बच्चे का मूल स्वभाव ही है। इसके पूर्वजन्म में जब यह शेर था, तब मैंने इसे सताया था। अगर हम दूसरों को पीड़ा देते हैं, तो इस मृत्युलोक में उसका भुगतान होता है। इसीलिए, किसी को भी दुख दिये बगैर इस मृत्युलोक में अच्छा व्यवहार करना चाहिए। जब तक आत्मज्ञान नहीं होता तब तक अगर हम दूसरों को दुख देते हैं, तो उसका फल हमें पूरी तरह से भुगतना पड़ता है तथा उस कर्मभोग से हम किसी भी प्रकार बच नहीं सकते।" ऐसा सिद्धनाथजी कहते ही सभी भक्तगण बोले, "गुरुमहाराजजी, गुरप्पा के पूर्वजन्म की अपूर्व कहानी सुनने की हमारी मनोकामना है, इसलिए वह कथा आप हमें सुनाईए। हे सिद्धनाथजी, आपकी परम पवित्र जीवनी हमें कृपा करके सुनाईए, जिसे सुनते ही हमारे कान पवित्र होकर हम धन्य हो जाएंगे।" उसपर सतगुरुजी ने कहा, "दूर उस मार्ग पर एक बालक खेल रहा है, क्या आप देख रहे हैं? उसे यहाँ ले आईए।" यह सुनकर उन भक्तों ने मार्ग पर ही खेल सजाकर खेलने वाले पाँच वर्ष आयु के उस निरीह बालक को बुला लाकर सिद्धनाथजी के सामने खड़ा किया। सिद्धजी ने उसे प्रेम से उठाया और एक केला देकर वहीं बैठकर खाने के लिए कहा; वह बालक केला खाने लगा। केला खाने के पश्चात उसका चेहरा दिव्य प्रभा से चमकता हुआ देखते ही सारे भक्तगण आश्चर्य से दंग रह गये। उसपर सिद्धनाथजी ने भक्तों से कहा, "अब उसे गुरप्पा के पूर्वजन्म की कहानी पूछिए, वही आप को सब कुछ विस्तार से

बता देगा।" भक्तों ने उस बालक से पूछा, "हे बालक, पुराने जमाने में सिद्धनाथजी किसी शेर के साथ खेलते थे, अगर यह कथा तुम जानते हो, तो हमें बता दो।" वह बालक बोला, "हे सद्भक्तों, सुनिए। तीस वर्षों से पूर्व, सिद्धनाथजी पृथ्वी पर भ्रमण करते हुए कावेरी नदी के किनारे पहुँच गये। नदी के किनारे घनघोर जंगल था, जहाँ चरवाहों के बच्चों को भेड़बकरियों को चरने छोड़कर खेलते हुए सिद्धनाथजी ने देखा। सिद्धजी उनके पास पहुँचते ही बच्चों ने उन्हें खेलने के लिए बुलाया। कुछ समय खेलने के पश्चात्, बच्चों को भूख लगी उसपर उन्होंने अपने साथ लाए कलेवे खोलकर सिद्धजी को भी खाने के लिए बुलाया। सभी इकट्ठा होकर आनंद के साथ खाने लगे, तब बकरियाँ चैन से चर रही थी। अचानक बकरियों को चारों ओर भागते हुए देखकर, चरवाहे भयभीत हुए। भोजन वहीं छोड़कर वे सारे बकरियों के पिछे भागे। सिद्धजी भी उठ खड़े हुए, उन्होंने बकरियाँ भाग खड़ी होने की वजह जान ली, एक शेर झुरमुटों के पिछे छुपा हुआ था। सिद्धजी झुरमुटों के पिछे छुपे शेर के पास पहुँचे और उन्होंने उसकी पीठ थपथपायी। शेर चौंककर भाग खड़ा हुआ, सिद्धनाथजी भी उस के पिछे भागे और उन्होंने उसका कान पकड़ लिया। तब वह शेर शक्तिहीन हो गया। सिद्धजी उसकी पीठ पर सवार हुए और चरवाहों को पास बुलाया, लेकिन चरवाहे वही के वही खड़े रह गये। शेर पर सिद्धनाथजी को चैन से सवार हुए देखकर वे दंग रह गये, फिर भी अभी भी उनके मन में भय था। भय से चकित हुए बालकों को देखकर सिद्धजी ने शेर को आगे चलने की प्रेरणा दी, शेर को आगे आते देखकर बालक भयग्रस्त होकर भागने की तैयारी में थे। सिद्धनाथजी ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा की उन्होंने बालकों के साथ खेलने के लिए जंगल का एक गरीब जानवर पकड़कर लाया है तथा वह जानवर किसी को भी कोई क्षति नहीं पहुँचायेगा। उसपर बालकों ने कहा, "निश्चित ही आप कोई महात्मा हैं। आप के पास दूसरों को वश करने की विशेष शक्ति हैं, परंतु हमारे पास ऐसी शक्ति नहीं है। आखिर शेर तो एक हिंसक जंगली जानवर ठहरा, उसकी करनी पर कौन भरोसा करें? हमें मन ही मन उसका बहुत भय लग रहा है।" तब सिद्धजी ने सब के सामने एक बालक को उठाकर जबरदस्ती से शेर के पीठ पर बिठाया, फिर भी शेर सिर झुकाकर शांति से खड़ा रहा। इस

प्रकार कुछ समय बीतने पर, सभी बालक हिम्मत जुटाकर उसके समीप गये; उसके पश्चात भय छोड़कर उसके शरीर पर हाथ फेरते हुए वे सभी उसके साथ खेलने लगे। उस दिन से प्रतिदिन बकरियाँ लेकर बालक नदी किनारे आते ही, शेर भी जंगल से निकलकर उनके साथ खेलने आता था। सिद्धनाथजी शेर पर सवार होते थे और सभी बालक शेर को हाँकते थे, सिद्धजी शेर से बहुत प्रेम करते थे, उसका चेहरा वे प्रेम से सहलाते थे। इस प्रकार दिन बीत रहे थे, की एक शिकारी ने यह अद्भुत खबर सुन ली और शेर को मारने की मन ही मन में एक तरकीब सोची। उसने सोचा की बिना कष्ट के अगर शेर हाथ लगता है तो उसे मारकर उसकी खाल सरकार को देने से कुछ इनाम जरूर मिलेगा। फिर एक दिन अपनी बंदूक में गोलियाँ भरके वह एक झुरमुट के पीछे छुपकर शेर की प्रतीक्षा करने लगा। इतने में बालक बकरियों को लेकर आये, उनके साथ सिद्धनाथजी भी आये। बालकों ने बकरियों को चरने हेतु छोड़ दिया और नदी किनारे वे खेलने लगे। बालकों को खेलते हुए देखते ही शेर भी निःशंक होकर जंगल से बाहर आया और उसने सिद्धनाथजी की ओर बड़े प्रेम से देखा। शिकारी ने शेर को समीप से जाते हुए देखा और उसके गले को लक्ष्य करके बंदूक दाग दी; गोली लगते ही शेर जोर से छलाँग लगाकर नीचे गिर पड़ा। नीचे गिरते समय उसने शिकारी को देख लिया और उसे अपने दोनों पंजों में कसकर पकड़ लिया तथा एक क्षण में उसका पेट चीर दिया। एक ही पल में दोनों निश्चल होकर गिर पड़े। वह भीषण दृश्य देखते ही बालक तथा सिद्धनाथजी वहाँ दौड़ते हुए चले आये। सिद्धजी शेर के पास पहुँचते ही उसने अति कष्ट से सिर उठाया और आहिस्ता सिद्धनाथजी के चरणों में रखा। शेर की आँखों से आँसू बहते हुए सिद्धनाथजी ने देखे। उन्होंने उसका सिर आहिस्ता उठाकर प्रेम से अपने गोद में रखा और दुख से बोले, "मेरे प्रिय मित्र, इस देह को त्यागकर तुम फिर तुम मनुष्य जन्म पाओगे, उस के पश्चात तुम हर दिन मेरे साथ खेल सकोगे इसलिए अब शांत हो जाओ।" ऐसा कहकर सिद्धनाथजी ने उसके सिर पर हाथ रखा, तत्काल शेर ने उनके चरणों में सिर रखकर प्राण त्याग दिये। शेर ने जताया हुआ प्रेम देखकर सभी की आँखों से झरझर अश्रू बहने लगे, और उन्होंने कहा, "निश्चित ही सिद्धनाथजी यह भगवान श्रीशिवजी का अवतार हैं; सभी ने

उनके चरणों को स्पर्श करके प्रणाम किया।" कुछ समय तक बेहोशी की परिस्थिति में रहने के पश्चात, कमजोर होने के कारण शिकारी उठ नहीं पा रहा था। सिद्धनाथजी उसके पास गये और उन्होंने अपना उपरना उसके पेट पर बांध दिया। बालक गाँव गये और गाँववालों को लेकर वहाँ पधारे। सिद्धजी ने उन्हें कहा, "इसे अपने साथ ले जाईए। जखमी हालत में वेदना सहते हुए यह इसी प्रकार लेटा रहेगा ओर कम से कम छह महिने तक तो निश्चित ही नहीं मरेगा। आप लोग मिलकर कोशिश करके इसकी रक्षा करते रहना।" उनकी बातें सुनकर आश्चर्य से दंग हुए लोग कहने लगे की यह मनुष्य निश्चित ही कोई महात्मा होगा, उसपर उन्होंने सिद्धनाथजी की आज्ञा का पालन किया। उसके पश्चात सिद्धारूढ़जी भ्रमण के लिए आगे चल पड़े। हे सद्भक्तगण, यह कहानी यहीं समाप्त हुई। महात्मा के चरण स्पर्श से शेर को मनुष्य योनि में जन्म प्राप्त हुआ, वही शेर गुरप्पा का जन्म लेकर आया है तथा प्रतिदिन सिद्धारूढ़जी के साथ खेलता रहता है। आप ने पूछी हुई गुरप्पा के पूर्वजन्म की कहानी यही है।" इतना कहकर वह बालक कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा। तब भक्तों ने कहा, "हे बालक, तुम्हें यह कहानी कैसे ज्ञात हो गई, क्या हमें बताओगे?" वह बालक बोला, "अब ध्यान से सुनिए। अभी अभी मैं ने जो कुछ भी आप को विस्तार से बताया, वह सब कुछ श्रीसिद्धारूढ़जी की कृपा से मेरे आँखों के सामने घटता हुआ मुझे दिखाई पड़ा।" यह कहकर वह बालक फिर चुप हो गया। उसके पश्चात सिद्धनाथजी ने उसे कुछ फल खाने के लिए दिये, वे खाते ही वह सब कुछ भूल गया और फिर से जाकर रास्ते पर खेलने लगा। भक्त कहने लगे की ऐसी पुण्यदायक कहानी सुनकर हम धन्य हो गये और उन्होंने सिद्धारूढ़जी तथा गुरप्पा को प्रणाम किया।

श्रोतागण, अब इस कहानी लक्ष्यार्थ सुनिए, जिस पर चिंतन करने से आप परमार्थ साधने में सफल होंगे। सतगुरुजी जो उपदेश देत हैं, उसका अर्थ भी आप को यहीं प्राप्त होगा। बकरियों को विषयोपभोगों की वृत्तियाँ समझ लीजिए और निश्चित रूप से चरवाहों को अज्ञानी जीवात्माएँ समझिए। जब चरवाह रूपी जीवात्माएँ विषयोपभोग की वृत्तियों को छोड़कर खेलने लगते हैं, उस समय विवेक रूपी सिद्धनाथजी वहाँ प्रकट होते हैं। इससे पूर्व इन अज्ञानी

जीवात्माओं को क्रोधादि भावनाओं के कारण बहुत दुख होता था, परंतु विवेक को स्वीकारने के पश्चात, सभी प्रकार के भय से वे मुक्त हो गये। एकबार अति क्रूर क्रोध रूपी शेर वहाँ प्रकट हुआ, उस समय सभी वृत्तियाँ भाग खड़ी हुयी, तब विवेक ने तत्काल कठोर क्रोध को रोक लिया। उस दिन से क्रोध रूपी शेर शांत होकर विवेक (गुण) के साथ खेलने लगा। एक बार वैराग्य रूपी शिकारी ने वहाँ आकर क्रोध को पूर्णतः मार ही डाला। क्रोध और वैराग्य इन दोनों के युद्ध में वैराग्य भी घायल हो गया, परंतु विवेक ने उसे बचा लिया और कुछ समय के बाद वह (विवेक) फिर से सशक्त हो गया। कुछ समय के पश्चात जब विवेक सिद्धस्थिति (परिपूर्णता की स्थिति) को प्राप्त हो गया, तब क्रोध का पुनर्जन्म हुआ। फिर से जन्म लिए हुए क्रोध को 'व्यैतनिराकरण' (यानी जीवात्मा तथा परमात्मा ये दोनो भिन्न हैं इस विचार का पूर्ण रूप से खंडन होना) ऐसा नाम दिया था और सिद्धनाथजी प्रतिदिन उसे खिलाते थे। इस प्रकार इस कहानी जो लक्ष्यार्थ है, उसपर मनन करने से सतगुरुजी की कृपा से व्यैतभाव (मैं और तुम अथवा जीवात्मा तथा परमात्मा ये एक दूसरे से भिन्न हैं ऐसी भावना) नष्ट होकर हृदय में आत्मज्ञान जागृत होगा। अगले अध्याय में बयान की हुई कहानी सुनते ही आप के हृदय में स्थित षड्रिपु का नाश होगा। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह अद्वारवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥